Shrimad Rajchandra Mission Delhi

अपूर्व अवसर और गुणस्थान आरोहण क्रम

अपूर्व अवसर सत्संग (पर्युषण पर्व 2020)

S.No.	गुणस्थान	मोहनीय कर्म प्रकृति उपशम/क्षय	साधक जीवन	अपूर्व अवसर गाथा
1	मिथ्यात्व	28 प्रकृति का उदय	भव्य - अभव्य - पतित	1, 2
2	सास्वादन	-	तत्त्व श्रद्धा और सत्संग रुचि के कारण यहाँ रहता है	1, 2
3	मिश्र	-	* मंथन-चिंतन-मनन की भूमिका है। * सत्संग में सुनी बातों पर भरोसा है परंतु अनुभव नहीं है।	1, 2
4	अविरति सम्यक् दृष्टि	दर्शन मोहनीय (3) - मिथ्यात्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय, सम्यक्त्व मोहनीय चारित्र मोहनीय (4) - अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ	Inner Bliss + शुभ क्रिया **कषाय उपशम** - स्वरूप समझे बिना धर्म जगत में प्रवर्तता है। **कषाय क्षय** - स्वरूप समझ कर समग्र विकास करता है।	3
5	देशविरति सम्यक् दृष्टि	चारित्र मोहनीय (4) - अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ	Inner Bliss + शुभ क्रिया + आंशिक संयम	4, 5, 6, 7
6	सर्वविरति सम्यक् दृष्टि (प्रमत संयत)	चारित्र मोहनीय (4) - प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ	Inner Bliss + शुभ क्रिया + संपूर्ण संयम + साक्षी भाव	8, 9, 10, 11, 12
7	अप्रमत संयत	चारित्र मोहनीय (3) - संज्वलन क्रोध, मान, माया	* सम्पूर्ण आनंद में स्व-स्थिरता * 6-7 झूला जैसा	8, 9, 10, 11, 12

S.No.	गुणस्थान	मोहनीय कर्म प्रकृति उपशम/क्षय	साधक जीवन	अपूर्व अवसर गाथा
8	अपूर्व करण	चारित्र मोहनीय नोकषाय (6) - हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा	उपशम या क्षपक श्रेणी	13
9	अनिवृत्ति बादर संपराय	चारित्र मोहनीय नोकषाय (3) - स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद	* उपशम या क्षपक श्रेणी	13
10	सूक्ष्म संपराय	चारित्र मोहनीय (1) - संज्वलन लोभ	उपशम या क्षपक श्रेणी	13
11	उपशांत मोहनीय	कर्म प्रकृति उदय	* उपशम श्रेणी * साधक का पतन हो कर 6, 4, 3, 2, 1 गुणस्थान में जाता है।	N.A.
12	क्षीण मोहनीय	मोहनीय क्षय + ज्ञानावर्णीय, दर्शनावर्णीय, अंतराय क्षय	क्षपक श्रेणी संपन्न	14
13	सयोगी केवली	घाती कर्म क्षय अघाती कर्म उदय उदय (आयुष्य, नाम, गोत्र, वेदनीय)	केवलज्ञान	15, 16
14	अयोगी केवली	अघाती कर्मों का अंतिम समय मन-वचन-काया के योग का विसर्जन		17
15	गुणस्थानातीत		शुद्ध-बुद्ध-मुक्त Dissolved in Oneness	18, 19
16			गुरु-आज्ञा में साधक की भावना	20, 21